प्राकृतिक आपदा और विश्व बैंक का टूलकिट

संदर्भ: विश्व बैंक समूह ने प्राकृतिक आपदाओं और अन्य आपात स्थितियों से निपटने के प्रयासों में राष्ट्रों की सहायता के लिए संसाधनों के एक व्यापक सेट का अनावरण किया है।

टूल किट की आवश्यकता

- प्राकृतिक आपदाओं के संकट से निपटने की तैयारी, प्रतिक्रिया और रिकवरी के लिए जारी किए गए इस टूलकिट में कई प्रमुख तत्व शामिल हैं।
- टूलकिट देशों को प्राकृतिक आपदाओं और संकटों की बढ़ती घटनाओं और परिमाण पर प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया करने में सक्षम बनाने के लिए आवश्यक है।
- यह राष्ट्रों में विकास के लचीलेपन की सुविधा प्रदान करता है, उन्हें ऐसी घटनाओं का बेहतर ढंग से सामना करने और उनसे उबरने के लिए सशक्त बनाता है।
- टूलकिट ज्ञान और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने की व्यवस्था को बढ़ावा देता है, जिससे देशों को एक-दूसरे के अनुभवों से सीखने और अपनी आपदा प्रतिक्रिया क्षमताओं को बढ़ाने का अवसर मिलता है।
- यह प्रभावित आबादी और बुनियादी ढांचे पर प्रभाव को कम करते हुए, आपदाओं और संकटों के लिए त्वरित और कुशल प्रतिक्रिया सुनिश्चित करता है।
- तेजी से रिकवरी का समर्थन करके, टूलकिट गरीबी उन्मूलन प्रयासों में योगदान देता है, प्रभावित समुदायों को उनके जीवन और आजीविका के पुनर्निर्माण में मदद करता है।

टूलकिट की विशेषताएं और आपदा का सामना करने वाले देशों पर उनका प्रभाव:

ऋण भुगतान में रोक:

- इसके अंतर्गत विश्व बैंक समूह एक लचीला जलवायु ऋण खंड पेश करने की योजना बना रहा है। इस खण्ड या क्लॉज के अंतर्गत सबसे कमजोर देशों को ऐसे किसी संकट या आपदा के समय ऋण भुगतान अस्थायी रूप से रोकने की अनुमति का प्रावधान होगा । परिणामस्वरूप ऋण अदायगी के बोझ को कम करके, देश अपनी आबादी की तात्कालिक जरूरतों को पूरा करने को प्राथमिकता दिया जा सकता है।

पुनर्निर्देशन वित्तपोषण:

- यह देशों को आपातकालीन प्रतिक्रिया के लिए धन को तुरंत पुनर्निर्देशित करने की सुविधा प्रदान करता है।
- यह आपदा प्रबंधन और पुनर्प्राप्ति प्रयासों के लिए नकदी की तत्काल पहुंच सुनिश्चित करता है।

संकट की तैयारी और वित्तपोषण को जोड़ना:

- यह सरकारों को उन्नत आपातकालीन प्रणालियाँ बनाने में मदद करता है।
- यह पहले दिन से ही संकटों का प्रभावी ढंग से जवाब देने के लिए तैयारियों को बढ़ाता है।

निजी क्षेत्र के समर्थन से विकास परियोजनाओं को समर्थन देना:

- यह संकट की तैयारी और प्रतिक्रिया में निजी क्षेत्र को सहायता प्रदान करके विकास परियोजनाओं का समर्थन करता है।
- यह व्यवसायों को संचालन बनाए रखने, नौकरियों की रक्षा करने और आपदाग्रस्त क्षेत्रों में दीर्घकालिक स्थिरता को बढ़ावा देने में सक्षम बनाता है।

ऋण के बिना संवर्धित आपदा बीमा का निर्माण:

- यह कैट बॉन्ड जैसे आपदा बीमा विकल्पों को बढ़ाता है।
- यह आपदा बीमा को ऋण उत्पादों में एकीकृत करता है।
- यह आपदाग्रस्त देशों पर ऋण का बोझ बढ़ाए बिना उन्हें संसाधन उपलब्ध कराना।

विश्व बैंक:

- यह विकास परियोजनाओं और कार्यक्रमों के लिए अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान है।
- इसकी स्थापना 1944 में हुई थी ,इसका मुख्यालय वाशिंगटन, डी.सी. में है।
- इसका उद्देश्य गरीबी को कम करना और साझा समृद्धि को बढ़ावा देना है।
- यह अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक (आईबीआरडी) और अंतर्राष्ट्रीय विकास संघ (आईडीए) से मिलकर बना है।
- यह शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, बुनियादी ढांचे और शासन जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है।

विश्व बैंक समूह:

- यह पाँच अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का संग्रह है।
- इसमें IBRD, IDA, IFC, MIGA और ICSID शामिल हैं।
- ये विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मिलकर कार्य करते हैं।
- यह निजी क्षेत्र के निवेश को बढ़ावा देता है, जोखिम बीमा प्रदान करता है और निवेश विवादों का समाधान करता है।
- यह गरीबी, रोजगार सृजन, जलवायु परिवर्तन और टिकाऊपन जैसी चुनौतियों का समाधान करता है।

भारत मिस्र संबंध

संदर्भ: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रपति अल-सिसी (**मिस्र**) के बीच बातचीत के दौरान, भारत और मिस्र ने रणनीतिक साझेदारी पर एक समझौते पर हस्ताक्षर किया है।

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सिसी के बीच वार्ता के दौरान भारत और मिस्र ने एक रणनीतिक साझेदारी समझौते पर हस्ताक्षर किया है।
- यह समझौता इस साल जनवरी में अल-सिसी की भारत यात्रा के दौरान द्विपक्षीय संबंधों को रणनीतिक साझेदारी तक बढ़ाने के उनके निर्णय का परिणाम है।
- राष्ट्रपति अल-सीसी द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को मिस्र के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, ऑर्डर ऑफ द नाइल से सम्मानित किया गया।
- ऑर्डर ऑफ द नाइल द्वारा अतीत में नेल्सन मंडेला, जिमी कार्टर और महारानी एलिजाबेथ द्वितीय जैसी उल्लेखनीय हस्तियों को सम्मानित किया गया है।

ऐतिहासिक संबंध :

- भारत और मिस्र के बीच संपर्क सम्राट अशोक के समय से चले आ रहे हैं, जो जो प्राचीन सभ्यताओं के एतिहासिक सम्बन्धों को दर्शाते हैं।
- महात्मा गांधी और मिस्र के क्रांतिकारी साद ज़घलौल ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से आजादी की लड़ाई में समान लक्ष्य साझा किए थे।

भूरणनीतिक संबंध:

- अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में मिस्र महत्वपूर्ण भू-रणनीतिक अवस्थिति रखता है क्योंकि वैश्विक व्यापार का 12% स्वेज नहर से होकर गुजरता है।
- यह भारत के लिए एक प्रमुख बाजार और यूरोप एवं अफ्रीका दोनों के लिए प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है।
- मिस्र के पश्चिम एशिया और अफ्रीका के महत्वपूर्ण देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते हैं।

राजनीतिक संबंध:

- भारत और मिस्र के बीच राजदूत स्तर पर राजनयिक संबंध 1947 में स्थापित किये गये थे।
- गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए 1955 में प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू और राष्ट्रपति गमाल अब्देल नासिर द्वारा मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- दोनों देशों के मध्य 2011 की मिस्र क्रांति के बाद भी उच्च स्तरीय आदान-प्रदान जारी रहा।
- मिस्र को भारत एक उदार इस्लामी आवाज के रूप में देखता है, जो इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआईसी) में सक्रिय रूप से भाग लेता है।

आर्थिक संबंध:

- भारत-मिस्र द्विपक्षीय व्यापार समझौता 1978 से लागू है।
- पिछले दशक में द्विपक्षीय व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
- दोनों देशों के मध्य कृषि सहयोग महत्वपूर्ण है क्योंकि यूक्रेन-रूस युद्ध के कारण मिस्र को खाद्यान्न की कमी का सामना करना पड़ रहा है।
- विदेशी मुद्रा प्रवाह बढ़ाने के लिए मिस्र का लक्ष्य भारत से पर्यटन को बढ़ावा देना है।
- मिस्र में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) स्थापित करने की योजना पर काम चल रहा है।
- मिस्र भारत से रक्षा उपकरण खरीदने में रुचि रखता है, जिसमें एलसीए तेजस, मिसाइल और रडार शामिल हैं।
- मिस्र को एयरो-इंडिया 2023 में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया है।

हालिया रणनीतिक साझेदारी:

- भारत-मिस्र द्विपक्षीय संबंध को "रणनीतिक साझेदारी" तक बढ़ाया गया।
- साझेदारी के चार मुख्य तत्व हैं
  - राजनीतिक, रक्षा और सुरक्षा,
  - आर्थिक जुड़ाव,
  - वैज्ञानिक और शैक्षणिक सहयोग, और
  - सांस्कृतिक और लोगों से लोगों के बीच संपर्क।

नई सहायक प्रजनन प्रौद्योगिकी (एआरटी) विनियम, 2023

संदर्भ: स्वास्थ्य मंत्रालय ने सहायक प्रजनन प्रक्रियाओं में शामिल दाताओं और रोगियों के लिए चिकित्सा देखभाल और सुरक्षा बढ़ाने के उद्देश्य से सहायक प्रजनन प्रौद्योगिकी विनियम (एआरटी), 2023 पेश किया है।

नए नियम:

- नए सहायक प्रजनन प्रौद्योगिकी (एआरटी) प्रावधान एक अंडाणु दाता द्वारा अपने जीवनकाल में किए जाने वाले दान की संख्या को सीमित करते हैं और दाताओं के लिए आयु सीमा निर्धारित करते हैं।
- अंडाणु दाताओं को विवाहित होना चाहिए और उनका अपना कम से कम एक जीवित बच्चा होना चाहिए, और वे केवल एक बार अंडाणु दान कर सकते हैं, अधिकतम सात अंडाणु प्राप्त किए जा सकते हैं।
- एआरटी बैंक एक दाता से एक से अधिक कमीशनिंग जोड़े को प्रजनन कोशिकाओं की आपूर्ति नहीं कर सकते हैं।

- किसी भी हानि, क्षति या मृत्यु से सुरक्षा के लिए अंडाणु दाताओं के लिए बीमा कवरेज आवश्यक है।
- इन नियम के अंतर्गत पूर्व निर्धारित लिंग के आधार पर बच्चे की पेशकश करना निषिद्ध है, और भ्रूण प्रत्यारोपण से पहले आनुवंशिक रोग की जांच आवश्यक है।
- नए एआरटी कानूनों में प्रतिबंध, एआरटी जोड़ों के लिए उपयुक्त दाताओं को खोजने के अवसरों को सीमित करते हैं।
- नया नियम लागत बढ़ा सकता है और सहायक प्रजनन तकनीकों पर निर्भर जोड़ों के लिए चुनौतियाँ पैदा कर सकते हैं।
- सहायक प्रजनन प्रौद्योगिकी (एआरटी) में गर्भधारण और गर्भावस्था को सुविधाजनक बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली विभिन्न चिकित्सा प्रक्रियाएं और प्रौद्योगिकियां शामिल हैं।

अपराध और दंड

- लिंग चयनात्मक एआरटी के प्रावधान के तहत पांच से दस साल तक की कैद या 10 से 25 लाख रुपये तक जुर्माना या दोनों हो सकते हैं।
- विधेयक कई अपराधों के लिए भी प्रावधान करता है, जिनमें (i) एआरटी के माध्यम से पैदा हुए बच्चों को छोड़ना या उनका शोषण करना, (ii) मानव भ्रूण या युग्मक को बेचना, खरीदना, रैकेट चलाना, व्यापार करना या आयात करना, (iii) कमीशनिंग जोड़े, महिला का शोषण करना शामिल है। या किसी भी रूप में युग्मक दाता, (v) मानव भ्रूण को नर या जानवर में स्थानांतरित करना, (vi) अनुसंधान के लिए भ्रूण या युग्मक बेचना, और (vii) दाताओं को प्राप्त करने या खरीदने के लिए मध्यवर्ती का उपयोग करना।
- इन सभी अपराधों के लिए पहली बार में 5 से 10 लाख रुपये का जुर्माना और प्रत्येक बाद के उल्लंघन के लिए 10 से 20 लाख रुपये के बीच जुर्माना और आठ से बारह साल की कैद की सजा हो सकती है।

एआरटी के तरीके:

- **इन विट्रो फर्टिलाइजेशन (आईवीएफ):** सबसे आम एआरटी विधि जहां अंडाशय से अंडे प्राप्त किए जाते हैं, प्रयोगशाला में शुक्राणु के साथ निषेचित किया जाता है, और फिर गर्भाशय में स्थानांतरित किया जाता है।
- **इंट्रासाइटोप्लाज्मिक स्पर्म इंजेक्शन (आईसीएसआई):** एक ऐसी तकनीक जहां निषेचन की सुविधा के लिए एक शुक्राणु को सीधे अंडे में इंजेक्ट किया जाता है।
- **गैमेटे इंट्राफैलोपियन ट्रांसफर (गिफ्ट):** इस विधि में, अंडे और शुक्राणु को महिला के शरीर के अंदर निषेचन की अनुमति देने के लिए फैलोपियन ट्यूब में स्थानांतरित किया जाता है।
- **जाइगोट इंट्राफैलोपियन ट्रांसफर (ZIFT):** GIFT के समान, लेकिन निषेचित अंडे (जाइगोट्स) को फैलोपियन ट्यूब में स्थानांतरित कर दिया जाता है।
- **कृत्रिम गर्भाधान (एआई):** यह निषेचन की सुविधा के लिए महिला के प्रजनन पथ में सीधे शुक्राणु प्रत्यारोपित करने की प्रक्रिया है।

एआरटी के प्रकार:

- **अंतर्गर्भाशयी गर्भाधान (आईयूआई):** एक ऐसी विधि जहां निषेचन की संभावना बढ़ाने के लिए तैयार शुक्राणु को ओव्यूलेशन के दौरान सीधे गर्भाशय में रखा जाता है।
- **दाता अंडा या शुक्राणु:** जब किसी दाता के अंडे या शुक्राणु का उपयोग एआरटी प्रक्रिया में किया जाता है।
- **सरोगेसी**: एक ऐसी प्रक्रिया जहां एक अन्य महिला ऐसे व्यक्तियों या जोड़ों के लिए बच्चे को जन्म देती है जो गर्भधारण करने में असमर्थ हैं या स्वयं गर्भधारण करने में असमर्थ हैं।

NEWS IN BETWEEN THE LINES

आईएनएस सुनयना

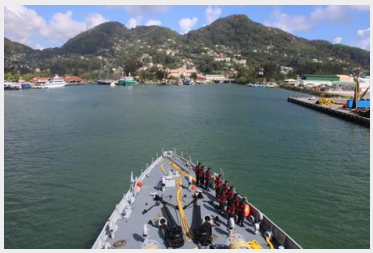

सन्दर्भ: भारतीय नौसेना के सरयू श्रेणी के अपतटीय गश्ती जहाज आईएनएस सुनयना ने हाल ही में (20-23 जून 2023) मोम्बासा, केन्या का दौरा किया।

विशेषताएं :

- आईएनएस सुनयना एक सरयू श्रेणी का अपतटीय गश्ती जहाज है जिसका कोच्चि में जलावतरण किया गया था।
- यह दक्षिणी नौसेना कमान के तहत संचालित होता है और इसे गोवा शिपयार्ड लिमिटेड में बनाया गया था।
- यह 25 नॉट तक की गति प्राप्त करने में सक्षम है और उन्नत नेविगेशन, संचार और इलेक्ट्रॉनिक समर्थन प्रणालियों से सुसज्जित है।
- यह नवीनतम नेविगेशन, संचार और इलेक्ट्रॉनिक सपोर्ट सिस्टम से सुसज्जित है।
- अन्य सरयू श्रेणी में आईएनएस सुमित्रा और आईएनएस सुमेधा शामिल हैं।

पैसेज एक्सरसाइज (PASSEX):

- यात्रा के दौरान, भारतीय नौसेना और केन्याई नौसेना के बीच एक समुद्री साझेदारी अभ्यास, जिसे आमतौर पर PASSEX के रूप में जाना जाता है, आयोजित किया गया था।
- इस अभ्यास का उद्देश्य दोनों नौसेना बलों के बीच अंतरसंचालनीयता और परिचालन समन्वय को बढ़ाना है।

केदारनाथ मंदिर

सन्दर्भ: हाल ही में, उत्तराखंड सरकार ने केदारनाथ मंदिर के गर्भगृह में सोना चढ़ाने से संबंधित ₹1.25 अरब के घोटाले के आरोपों की जांच के लिए एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया है।

विशेषताएं :

- केदारनाथ मंदिर भगवान शिव को समर्पित एक प्रतिष्ठित हिंदू मंदिर है।
- यह मंदाकिनी नदी के पास गढ़वाल हिमालय श्रृंखला में 3,584 मीटर की ऊंचाई पर,उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित है।

छोटा चार धाम: केदारनाथ चार तीर्थ स्थलों में से एक है जिसे छोटा चार धाम के नाम से जाना जाता है जिसमें यमुनोत्री, गंगोत्री, बद्रीनाथ और केदारनाथ धाम शामिल हैं।

निर्माण और वास्तुकला:

- किंवदंती है कि पांडवों ने मूल केदारनाथ मंदिर का निर्माण किया था जिसे बाद में 8वीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य द्वारा पुनर्निर्मित किया गया था।
- यह मंदिर बड़े और समान आकार के भूरे पत्थर के स्लैब के साथ उल्लेखनीय वास्तुकला में निर्मित है, ये पत्थर लोहे के क्लैंप से जुड़े हुए हैं।

ज्योतिर्लिंग:

- केदारनाथ मंदिर भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है, जो ऐसे मंदिर हैं जहां भगवान शिव की पूजा ज्योतिर्लिंग के रूप में की जाती है।
- प्रत्येक ज्योतिर्लिंग भगवान शिव की एक अलग अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

डेब्रीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य

सन्दर्भ: हाल ही में डेब्रीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य में एक प्री-मानसून संकेत सर्वेक्षण किया, जिसमें अभयारण्य के भीतर प्रति वर्ग किलोमीटर 46 जानवरों के शिकार घनत्व का पता चला।

विशेषताएं :

- ओडिशा राज्य में स्थित डेब्रीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य एक महत्वपूर्ण संरक्षित क्षेत्र है जो अपनी विविध वनस्पतियों और जीवों के लिए जाना जाता है।
- यह अभयारण्य 1985 में स्थापित किया गया था और हीराकुंड बांध और जलाशय के बीच स्थित है।
- यह क्षेत्र ऐतिहासिक महत्व रखता है क्योंकि यह अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह के दौरान प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी वीर सुरेंद्र साई की गतिविधियों का आधार केंद्र था।

शिकार घनत्व सर्वेक्षण:

- हाल ही में डेब्रीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य में किए गए प्री-मानसून सर्वेक्षण में प्रति वर्ग किलोमीटर 46 जानवरों का शिकार घनत्व दर्ज किया गया।
- यह अभयारण्य के भीतर वन्यजीवों की विविध श्रृंखला का समर्थन करने वाले एक स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र की उपस्थिति को इंगित करता है।

वनस्पति और जीव:

- यह अभयारण्य अपने विविध वन्य जीवन के लिए जाना जाता है। अभयारण्य में पाई जाने वाली कुछ उल्लेखनीय प्रजातियों में भारतीय बाइसन, जंगली सूअर और सांभर शामिल हैं।
- शुष्क पर्णपाती वन पौधों के जीवन की एक समृद्ध विविधता का समर्थन करते हैं, जो सर्दियों के महीनों के दौरान कई पक्षी प्रजातियों को आकर्षित करते हैं।

डेब्रीगढ़ 48 पहल:

- विभिन्न चिंताओं को दूर करने के लिए वन्यजीव प्रभाग द्वारा 'डेब्रीगढ़ 48' पहल शुरू की गई थी।
- इस पहल का एक उद्देश्य ग्रामीणों को वन्यजीवों को नुकसान पहुंचाने से रोकना है।
- इसका उद्देश्य स्थानीय समुदाय के साथ जुड़कर अभयारण्य की परिधि के परिदृश्य के बारे में खुफिया जानकारी इकट्ठा करना है।

हीराकुंड बांध:

- हीराकुंड बांध डेब्रीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य के पास स्थित एक उल्लेखनीय संरचना है।
- यह मिट्टी, कंक्रीट और चिनाई का उपयोग करके बनाया गया एक मिश्रित बांध है।
- इस बांध को भारत का सबसे लंबा प्रमुख मिट्टी का बांध होने का गौरव प्राप्त है।
- यह भारत की आजादी के बाद शुरू की गई और 1957 में आरंभ होने वाली पहली बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं में से एक है।
- यह बांध महानदी नदी बेसिन में सिंचाई, पनबिजली उत्पादन और बाढ़ नियंत्रण सहित विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करता है।

समाचार में स्थान

गुवाहाटी (असम)

सन्दर्भ: हाल ही में, असम के गुवाहाटी में कामाख्या मंदिर में चार दिनों तक चलने वाला महत्वपूर्ण त्योहार अंबुबाची मेला शुरू हुआ है।

अंबुबाची मेला:

- अंबुबाची मेला गुवाहाटी के कामाख्या मंदिर में मनाया जाने वाला एक धार्मिक त्योहार है।
- कामाख्या मंदिर 51 शक्तिपीठों में से एक है, जो भगवान शिव की सहचरी सती के शरीर के अंग का प्रतिनिधित्व करता है।

गुवाहाटी:

- गुवाहाटी असम राज्य का सबसे बड़ा शहर है, जो पूर्वोत्तर भारत में स्थित है।
- यह क्षेत्र के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है और अपनी सांस्कृतिक विरासत, प्राचीन मंदिरों और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है।
- यह ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर स्थित है और पहाड़ियों से घिरा हुआ है।

असम:

- असम पूर्वोत्तर भारत का एक राज्य है जो वन्य जीवन, पुरातात्विक स्थलों और चाय बागानों सहित अपने विविध प्राकृतिक परिदृश्यों के लिए जाना जाता है।
- इसकी सीमा उत्तर में भूटान और अरुणाचल प्रदेश, पूर्व में नागालैंड और मणिपुर, दक्षिण में मेघालय और बांग्लादेश और पश्चिम में पश्चिम बंगाल से लगती है।

उमानंद मंदिर:

- उमानंद मंदिर ब्रह्मपुत्र नदी के पीकॉक द्वीप पर स्थित एक महत्वपूर्ण मंदिर है।
- यह भगवान शिव को समर्पित है और भक्तों और पर्यटकों को समान रूप से आकर्षित करता है।

हाजो:

- हाजो,दिसपुर के निकट एक प्राचीन तीर्थ स्थल है।
- यह क्षेत्र में स्थित विभिन्न मंदिरों, मस्जिदों और बौद्ध मठों के कारण हिंदुओं, मुसलमानों और बौद्धों के लिए धार्मिक महत्व रखता है।

मदन कामदेव:

- मदन कामदेव दिसपुर के पास एक ऐतिहासिक स्थल है जो अपने मंदिर परिसर के खंडहरों के लिए जाना जाता है।
- यह एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है और इतिहास में रुचि रखने वालों के लिए आकर्षक स्थान है।